

वसंत

भाग 2

कक्षा 7 के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक



0750



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण

मार्च 2007 चैत्र 1928

पुनर्मुद्रण

अक्तूबर 2007 कार्तिक 1929

दिसंबर 2008 मार्गशीर्ष 1930

दिसंबर 2009 पौष 1931

नवंबर 2010 अग्रहायण 1932

जनवरी 2012 माघ 1933

अक्तूबर 2012 अश्विन 1934

अक्तूबर 2013 अश्विन 1935

नवम्बर 2014 अग्रहायण 1936

दिसंबर 2015 अग्रहायण 1937

दिसंबर 2016 पौष 1938

नवंबर 2017 अग्रहायण 1939

दिसंबर 2018 अग्रहायण 1940

PD 550T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2007

₹ 60.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा पलक प्रिंटर्स, 6, मोहकमपुर इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज-II, मेरठ द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की विक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन. सी. ई. आर. टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016

फोन : 011-26562708

108, 100 फोट रोड

हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे

बनाशंकरी III इस्टेज

बैंगलुरु 560 085

फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014

फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस

निकट: धनकल बस स्टॉप पतिहटी

कोलकाता 700 114

फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स

मालीगांव

गुवाहाटी 781021

फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

संपादक : मीरा कांत

उत्पादन सहायक : प्रकाश वीर सिंह

आवरण

अरविंदर चावला

सज्जा

अरविंदर चावला

जोएल गिल

चित्रांकन

भूषण शालिग्राम

विप्लव शशि

जोएल गिल



आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मजबूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफी दूर तक ले जाएंगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभव पर विचार करने का कितना अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

यह उद्देश्य स्कूल की दैनिक जिंदगी और कार्यशैली में काफी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है, जितना वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को



तय करेगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् भाषा सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर नामवर सिंह और इस पुस्तक के मुख्य सलाहकार प्रोफेसर पुरुषोत्तम अग्रवाल की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान किया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री तथा सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और
प्रशिक्षण परिषद्





पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, भाषा सलाहकार समिति

नामवर सिंह, पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य सलाहकार

पुरुषोत्तम अग्रवाल, प्रोफेसर, भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

मुख्य समन्वयक

रामजन्म शर्मा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली

सदस्य

कमलानंद झा, हिंदी विभाग, सी.एन. कॉलेज, दरभंगा, बिहार

करुणा शर्मा, पूर्व पी.जी.टी. (हिंदी), ई-68, ईस्ट अंसारी नगर, एम्स, नयी दिल्ली

नूतन झा, अध्यापिका, मीरांबिका स्कूल, नयी दिल्ली

प्रभात कुमार झा, अंकुर, सर्वप्रिय विहार, नयी दिल्ली

प्रेमपाल शर्मा, 96 कला विहार, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली

मुकुल प्रियदर्शिनी, प्राध्यापिका, मिरांडा हाउस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राम गोपाल वर्मा, डी.पी.एस., आर.के.पुरम्, नयी दिल्ली

रामचंद्र, वरिष्ठ प्रवक्ता (हिंदी), भारतीय भाषा केंद्र, जे.एन.यू., नयी दिल्ली

सुशील शुक्ल, एकलव्य, अरेरा कालोनी, भोपाल, मध्य प्रदेश

सदस्य समन्वयक

प्रमोद कुमार दुबे, प्रवक्ता, भाषा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली





आभार

इस पुस्तक के निर्माण में जिन लेखकों और कवियों की रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसके लिए उन साहित्यकारों और प्रकाशन-संस्थाओं तथा अकादमिक सहयोग के लिए शारदा कुमारी और नीलकंठ के प्रति परिषद् आभार व्यक्त करती है।

इसके निर्माण में तकनीकी सहयोग के लिए परिषद् कंप्यूटर स्टेशन (भाषा विभाग) के प्रभारी परशराम कौशिक; डी.टी.पी. ऑपरेटर जय प्रकाश राय, कमलेश आर्य, सचिन कुमार, कमल कुमार और अरविंद शर्मा; कॉपी एडिटर राम जी तिवारी और सुप्रिया गुप्ता तथा प्रूफ रीडर आशीष मणि त्रिपाठी, कंचन शर्मा और अनामिका गोविल की आभारी है।





शिक्षक से

यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) के आधार पर तैयार किए गए पाठ्यक्रम पर आधारित है। यह पारंपरिक भाषा-शिक्षण की कई सीमाओं से आगे जाती है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा भाषा को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सबसे समृद्ध संसाधन मानते हुए उसे पाठ्यक्रम के हर विषय से जोड़कर देखती है। इस नाते पाठ्यसामग्री का चयन और अभ्यासों में विद्यार्थी के भाषायी विकास की समग्रता को ध्यान में रखा गया है। कई प्रश्न-अभ्यास भाषा शिक्षण की परिचित परिधि से बाहर जाकर प्रकृति, समाज, विज्ञान, इतिहास आदि में विद्यार्थी की जिज्ञासा को नए आयाम देते हैं। पाठ केंद्रित प्रश्नों को क्रमशः विस्तार देते हुए पाठ के आसपास के ज्ञान-क्षेत्रों को भी दूसरे प्रश्न-समूहों में साथ रखने का प्रयास किया गया है। भाषा की बात करते हुए ऐसे शब्दों और प्रयोगों पर विद्यार्थी का ध्यान दिलाया गया है जिन्हें समाज की जीवंतता को साहित्यिक कृतियों में समेटते हुए साहित्यकार अपनी कृति में रखना आवश्यक समझते हैं और अक्सर ऐसे आंचलिक शब्द और वाक्य प्रयोग आज के शहरी जीवन में अपेक्षाकृत कम सुनाई पड़ते हैं।

नयी कविता से पठन-पाठन का रिश्ता जोड़ने का प्रयास किया है। कई बार शिक्षकों में भी पारंपरिक शैक्षणिक पैमाने की दृष्टि के कारण नयी कविता को कुछ अटपटा मानने की प्रवृत्ति रही है। इससे साहित्य की समग्रता के प्रति विद्यार्थी की रुचि को बढ़ाने में हम सफल नहीं हो पाते। नयी कविता को पाठ्यपुस्तक में स्थान देते हुए कविता के सामान्य अर्थ को खोलने का प्रयास किया गया है और प्रश्न भी इस अंदाज़ से रखे गए हैं कि कविता से विद्यार्थी जुड़ सके। अंततः कोई भी भाषा-पुस्तक तभी सफल मानी जाएगी जब वह बच्चों को साहित्य की धरोहर और आज लिखे जा रहे साहित्य के प्रति भी उत्सुक बनाए।

हिंदी के प्रचलित विभिन्न रूप और उसकी बोलियाँ भी इसकी धरोहर का अंग हैं और उस लोक का निर्माण करती हैं जिसमें हिंदी फलती-फूलती रही है। विभिन्न पाठों में यत्र-तत्र प्रयोग में आए हिंदी के प्रचलित रूपों और बोलियों का ज्ञान संसाधन के रूप में शिक्षक इस्तेमाल करें और बच्चों को भी इसके प्रयोग के लिए प्रेरित करें तो हिंदी की इस विस्तृत लोक निधि के प्रति आदर और उत्साह का संस्कार विकसित होगा।



इस पाठ्यपुस्तक में **बहुभाषिकता** की झलक अनेक रूपों में मिलती है। भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से सरल रूप में तैयार किए गए प्रश्न विद्यार्थी को उत्सुक कर सकेंगे। शब्दों के मूल न केवल शब्दों के अर्थ को खोलते हैं, बल्कि विभिन्न भाषाओं के आपसी संबंधों को भी दिखाते हैं। संधिविच्छेद आदि के द्वारा शब्दों के मूलरूप या धातु के ज्ञान से शब्द परिवार और शब्द के विभिन्न अर्थों की जानकारी मिलती है। साथ ही विभिन्न भाषाओं के आपसी संबंध और निकटता का भी पता चलता है। पाठ्यपुस्तक में ही **व्याकरण** की समझ उत्पन्न करने के लिए इससे संबंधित अभ्यास दिए गए हैं, इसलिए अलग से व्याकरण की कोई पुस्तक नहीं दी जा रही है। आशा है ऐसे अभ्यासों के द्वारा विद्यार्थियों में भाषायी समझ विकसित होगी और बिना रटे ही उनमें भाषायी कौशलों का विकास होगा।

इसे ध्यान में रखकर इस किताब में विद्यार्थी की **स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल** और **सोच** को आसपास के परिवेश में ही विकसित करने हेतु विद्यार्थी की सृजनशील गतिविधियों को बढ़ावा देनेवाले अभ्यास दिए गए हैं। **अनुमान और कल्पना** तथा **कुछ करने को** भी इसी उद्देश्य से दिए गए हैं। विद्यार्थी शिक्षकों के सहयोग से अतिरिक्त अभ्यासों को पूरा कर सकते हैं। कुछ सामग्रियाँ **केवल पढ़ने के लिए** दी गई हैं जो कहीं तो पाठ के विषय को पोषित करती हैं और कहीं रचना की विविधता प्रस्तुत कर विद्यार्थी की रुचि का विस्तार करती हैं। **फूले कदंब, फेरीवालों की आवाज़ें** आदि इसी के नमूने हैं। शिक्षकों से आशा है कि वे पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का उचित मार्ग-दर्शन करेंगे। अपनी ओर से भी कुछ अभ्यास-कार्य व आवश्यक गतिविधियाँ स्वयं करवाएँगे।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नयी रूपरेखा में हाथों से की जानेवाली गतिविधियों, उसकी कला संबंधी दक्षता व रुचि को प्रोत्साहित करने तथा कक्षा के बाहर का जीवन-जगत कक्षा में लाने एवं उसे चर्चा का विषय बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

पाठ्यपुस्तक के प्रति विद्यार्थी के अपनेपन को और सघन बनाने के लिए पाठों के अतिरिक्त कुछ रोचक सामग्रियाँ दी गई हैं। इसी तरह पाठों के साथ विद्यार्थी की जानकारी और जिज्ञासा को बढ़ाने वाली सामग्रियाँ भी रखी गई हैं। इन पाठ्यसामग्रियों का अंतर्संबंध अन्य शैक्षिक विषयों से बनता है और इनसे विद्यार्थी के संबंधित ज्ञान में वृद्धि होती है। □





पाठ-सूची

आमुख		iii
शिक्षक से		vii
1. हम पंछी उन्मुक्त गगन के शिवमंगल सिंह 'सुमन'	कविता	1
2. दादी माँ शिवप्रसाद सिंह	कहानी	4
3. हिमालय की बेटियाँ नागार्जुन	निबंध	12
फूले कदंब (केवल पढ़ने के लिए) नागार्जुन		18
4. कठपुतली भवानीप्रसाद मिश्र	कविता	19
5. मिठाईवाला भगवतीप्रसाद वाजपेयी	कहानी	22
फेरीवालों की आवाज़ें (केवल पढ़ने के लिए)		32
6. रक्त और हमारा शरीर यतीश अग्रवाल	निबंध	34
7. पापा खो गए विजय तेंदुलकर	नाटक (मराठी)	42
8. शाम—एक किसान सर्वेश्वरदयाल सक्सेना	कविता	63
9. चिड़िया की बच्ची जैनेंद्र कुमार	कहानी	67





- | | | |
|------------------------------------------------------------------------|--------------------|-----|
| 10. अपूर्व अनुभव
तेत्सुको कुरियानागी | संस्मरण (जापानी) | 75 |
| 11. रहीम के दोहे
रहीम | कविता | 83 |
| 12. कंचा
टी.पद्मनाभन | कहानी (मलयालम) | 86 |
| 13. एक तिनका
अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' | कविता | 99 |
| 14. खानपान की बदलती तसवीर
प्रयाग शुक्ल | निबंध | 102 |
| 15. नीलकंठ
महादेवी वर्मा | रेखाचित्र | 108 |
| 16. भोर और बरखा
मीरा बाई | कविता | 119 |
| 17. वीर कुँवर सिंह
विभागीय | जीवनी | 122 |
| 18. संघर्ष के कारण मैं तुनुकमिज़ाज
हो गया : धनराज
विनीता पाण्डेय | साक्षात्कार | 129 |
| हमारी ख्वाहिश (केवल पढ़ने के लिए)
रामप्रसाद 'बिस्मिल' | | 135 |
| 19. आश्रम का अनुमानित व्यय
मोहनदास करमचंद गांधी | लेखा-जोखा | 136 |
| 20. विप्लव-गायन
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' | कविता | 141 |
| शब्दकोश | | 144 |

